किलहाल लेख्यकारीगण को अपने–अपने खास जरूरी कार्य के लिए रुपये की सख्त जरूरत आ पड़ी है , जो बिना जमीन बिक्री किए रुपये का प्रबंध हो पाना मुश्किल है । इसलिए लेख्यकारीगण अपने–अपने मन वो शरीर के पूर्ण स्वस्थता में , अपना–अपना कुल नफा नुकसान को अच्छी तरह से सोच समझकर, बसलाह अपने परिवार के सभी सदस्यों से तथा बिना किसी के डराने वो धमकाने के ईस बिक्रय पत्र के कंडिका संख्या पांच की दर्ज मवाजी 00–5.5 (पांच दशमलव पांच) डीसमिल जमीन को ईस बिक्रय पत्र के कंडिका संख्या 4(i) में में दर्ज मुल्य मो0 16,00,000/– सोलह लाख रुपये में साथ लेख्यधारणी के बेचा । रुपये जर्रेसमन का एक दफा पहले रजिस्ट्री के दो किस्तों में वसुल पा चुके है तथा लेख्यकारीगण दर्ज जमीन पर आज से ही लेख्यधारणी को पुर्ण रुप से कब्जा दखल दे दिये है। लेख्यकारीगण का लेख्यधारणी के पास जर्रेसमन मद्धे एक रुपया भी बाकी नहीं रहा है।

अब लेख्यधारणी को चाहिए कि इस बिक्रय पत्र के कंडिका संख्या पांच की दर्ज जमीन पर कायम वो काबिज दखिल होकर वो रहकर अपने इच्छानुसार राहीशी मकान का निर्माण करावे, मकान निर्माण के साथ साथ पानी निकास नाली, लैट्रिन टंकी, चापानल ईत्यादी का भी अपने सुविधानुसार निर्माण करावे या वक्तन जिस तरह से चाहेंगें अपने मनचाहा अमल में दर लावेंगें नाम अपना मालिक के सिरिस्ता में दर्ज कराकर माल वो शेष अदाय कर रसीद हासिल किया करेंगें। लेख्यकारीगण ईस दस्तावेज में दर्ज जमीन के हक हकुक अधिकार से हर तरह से बाज आए दर गुजरे , अब इस बिक्रय पत्र में दर्ज जमीन पर लेख्यकारीगण या इनके किसी भी वारीसान का कोई हक या दावा नहीं रहा वो न होगा।

लेख्यकारीगण ने लेख्यधारणी को पूर्ण विश्वास दिलाए हैं कि इस दस्तावेज के कंडिका संख्या पांच की दर्ज जमीन हर